श्रीः

अर्जुनगीता

—:o:—

जिसमें

भवभयत्रसित जनों के कल्याणार्थ चारों वर्णों के
व आश्रमों के धर्म-कर्म स्वयं श्रीकृष्णजी
ने अर्जुनजी के प्रति सविस्तार
वर्णन किये हैं।

—:o:—

प्रकाशक

तेजकुमार बुकडिपो (प्रा०) लिमिटेड

१, त्रिलोकनाथ रोड, लखनऊ-१

उत्तराधिकारी—नवलकिशोर बुकडिपो, लखनऊ

श्रीमती कमला भार्गव द्वारा
तेजकुमार प्रेस (प्रा०) लि०, लखनऊ में मुद्रित

चौथी बार २००० | सन् १९९५ ई० | मूल्य ६)००

श्रीः

अर्जुनगीता

—:o:—

जिसमें

भयत्रसित जनों के कल्याणार्थ चारों वर्णों के
व आश्रमों के धर्म-कर्म स्वयं श्रीकृष्णजी
ने अर्जुनजी के प्रति सविस्तार
वर्णन किये हैं।

—:o:—

प्रकाशक
नकुमार बुकडिपो (प्रा०) लिमिटेड
१, त्रिलोकनाथ रोड, लखनऊ-१
राधिकारी—नवलकिशोर बुकडिपो, लखनऊ

श्रीमती कमला भार्गव द्वारा
तेजकुमार प्रेस (प्रा०) लि०, लखनऊ में मुद्रित
सन् १९९५ ई०

चौथी बार

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ अर्जुनगीताप्रारम्भः ।

—: ० :—

दोहा ॥

हे यादव गोपीरमण, नीलजलद तनु श्याम ।
अर्जुनगीता रचत हौं, करिके तुमहिं प्रणाम १
बिघ्नहरण सब सुखकरण, गणपति प्रथम मनाय ।
छन्दबद्ध गीता करौं, भाषा महँ सुखदाय २
मोक्ष हेतु है साधु कहँ, गीता करे बिचार ।
अकथनीय है ईशयश, कहौं बुद्धि अनुसार ३
गुरु के पद पंकज विशद, तिनहीं को धरि ध्यान ।
सर्वबिश्व पावन करन, भाषौं गीता ज्ञान ४

श्रीगुरुबिष्णु के चरण मनाऊँ । जेहि प्रसाद गोबिन्दगुणगाऊँ ॥
श्रीमत् कृष्णार्जुन रसबानी । गुरु प्रसाद कछु कहौं बखानी ॥
एक समय आये यदुराई । अर्जुन संगम भो यकठाई ॥
धूप दीप लै आरति कीन्हा । चरणोदक माथे पर लीन्हा ॥
हाथ जोरि अर्जुन भये ठाढ़े । सहित भक्ति उर आनँद बाढ़े ॥
संशय प्रभु इक है चित मोरे । कहहुँ सो नाथ दोउ वर जोरे ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ अर्जुनगीताप्रारम्भः ।

—: ० :—

दोहा ॥

हे यादव गोपीरमण, नीलजलद तनु श्याम ।
अर्जुनगीता रचत हौं, करिके तुमहिं प्रणाम १
बिघ्नहरण सब सुखकरण, गणपति प्रथम मनाय ।
छन्दबद्ध गीता करौं, भाषा महँ सुखदाय २
मोक्ष हेतु है साधु कहँ, गीता करे बिचार ।
अकथनीय है ईशयश, कहौं बुद्धि अनुसार ३
गुरु के पद पंकज विशद, तिनहीं को धरि ध्यान ।
सर्वबिश्व पावन करन, भाषौं गीता ज्ञान ४

श्रीगुरुबिष्णु के चरण मनाऊँ । जेहि प्रसाद गोबिन्दगुणगाऊँ ॥
श्रीमत् कृष्णार्जुन रसबानी । गुरु प्रसाद कछु कहौं बखानी ॥
एक समय आये यदुराई । अर्जुन संगम भो यकठाई ॥
धूप दीप लै आरति कीन्हा । चरणोदक माथे पर लीन्हा ॥
हाथ जोरि अर्जुन भये ठाढ़े । सहित भक्ति उर आनँद बाढ़े ॥
संशय प्रभु इक है चित मोरे । कहहुँ सो नाथ दोउ वर जोरे ॥

दो० तीन लोक के ठाकुर, दीनबन्धु नँदलाल ।
बिनती करोंअधीन ह्वै, भाषहुँ बचन रसाल १

सुनु स्वामी त्रैलोक्य भुवारा । अर्जुन कछु बिनती अनुसारा ॥
सावधान ह्वै सुनहु गुसाईं । श्रेष्ठ मोक्ष कवने बिधि पाईं ॥
कौन धर्म कीन्हे गति होई । सो मोहिं कहहु न राखहु गोई ॥
स्थावर जंगम आदि बखानी । कीट पतंग बारि गुणखानी ॥
चारि खानि प्रभु तुमहिं बनाई । सबसों श्रेष्ठ कौन यदुराई ॥

दो० इनमें को अति श्रेष्ठ है, सो मोहिं कहहु बिचारि ।
चरण शरण प्रभुराखहू, होहु प्रसन्न मुरारि २

श्रीकृष्ण बोले मुसकाई । यह संशय तोहिं कहहुँ बुझाई ॥
कहैं रसाल बचन यदुबीरा । सब से दुर्लभ मनुजशरीरा ॥
मानुष अहैं बड़े ब्रह्मज्ञानी । ब्राह्मण ते बड़ तपसि बखानी ॥
तपसी सों बड़ सुनहु कुमारा । मोर नाम जेहि प्राण अधारा ॥
निशिबासर सुमिरै मोहिं जोई । तेहिते बड़ा और नहिं कोई ॥
केवल कृष्ण हृदय महँ ध्यावै । और बात कछु चित्त न लावै ॥

दो० एकनाम चित लाइके, सुमिरेनिशिदिनमोय ।
बिप्र तपस्वी अरुयती, तेहि पटतर नहिं कोय ३

अर्जुन बिनवै दोउकर जोरी । बिनती करहुँ मूढ़ मति भोरी ॥
तुम प्रभु आदि अन्त सब जाना । मोपर कृपा करहु भगवाना ॥
तुम जो कहा तपसि बड़ आहीं । नाम भजन के पटतर नाहीं ॥

यह संशय मोहिं कहहु बुझाई । श्रीमुख सुनहुँ तौमन पतिआई ॥
कहि कारण मैं लायों सेवा । कहहु भेद देवन के देवा ॥

दो० तपसी तप अधिकारि बड़, ज्ञान ध्यान दृढ़सोइ ।
नामभजहिंजोप्राणिनित, तेहिसमाननहिंकोइ ४

कहत रसाल बचन यदुराई । सुनु अर्जुन तोहिं कहहुँ बुझाई ॥
योग रीति सुनु पृथा कुमारा । तोसों बचन कहहुँ निरुवारा ॥
बर्ष सहसदश बीतहिं जबहीं । आसन दृढ़ तपसी हो तबहीं ॥
अन्तर प्राण त्याग जो कोई । प्रेम पुरुष भेंटैं पुनि सोई ॥
पुष्पकली बिकसै नहिं पाई । अन्तर्वास कहाँ ते आई ॥
रामनाम सुमिरण नहिं करहीं । कहु अर्जुन कैसे वे तरहीं ॥
तपसी तप सुनु कुन्तिकुमारा । योग यतीकर यह ब्यवहारा ॥

दो० नामकी महिमा जानई, साधै योग अघोर ।
काया आछत पावई, सत्य बचन सुनुमोर ५

अब सुनु अर्जुन कहौं बिचारी । नाम भजन सबते अधिकारी ॥
रामनाम सुमिरण जो करई । क्षणमहँभवसागर सो तरई ॥
मोर नाम भज जो चितलाई । धर्म अर्थ बिद्या फल पाई ॥
सो गृहस्थ अगणित सुख पावहि । प्राण अन्त बैकुंठ सिधावहि ॥
तेहिते बिष्णु सुनहु चितलाई । नाम भजन ते सब सुखपाई ॥
योग दुखद अति कुन्तिकुमारा । तुमसों बचन कहौं निरुवारा ॥
योग साध जो प्राणी ध्यावै । तबहीं अमर परम पद पावै ॥

भंग होय तो पार न पावै। जैसा मारग अन्ध भुलावै ॥
नाम कि महिमा गहत न आवै। क्षण इक भजै अमर पद पावै ॥
अर्जुन बचन सुनहु हम पाहीं। नाम भजनसम जग कछुनाहीं ॥
नाम भजन सुमिरण जो करई। भवसागर क्षणमहँ सो तरई ॥
मेरो नाम भजै चित लाई। गर्ब करै तो सहा न जाई ॥
तेहिते अर्जुन सुनु चित लाई। राम नाम ते सब सुख पाई ॥
राम नाम है जग आधारा। नाम लेत भवसागर पारा ॥
भक्त हमार प्राण सम अङ्गा। सदा रहौं भक्तन के सङ्गा ॥
सदा फिरौं भक्तन के साथा। शंख चक्र गदा धरि हाथा ॥
गाय संग बछरा जस रहई। क्षीरकि आश क्षणक ना जाई ॥
सुनु अर्जुन समुझावौं तोहीं। मोर नाम मोहन अस मोहीं ॥
नाम ब्रह्म चित जानै कोई। आवागमन न ताकर होई ॥

दो० परब्रह्म निश्चय करि, जानो कुन्तिकुमार।
तीन लोक तारै मही, एक नाम है सार ६

सुनहु पार्थ भाषौं मैं तोहीं। नाम भजै सो भेंटै मोहीं ॥
तेहिते मोरि कछू ना माया। अंतकाल चित राखों दाया ॥
भक्त हमार सदा हित आहीं। चारों युग कछु अंतर नाहीं ॥
भक्त एक हमहीं करि देखहु। भिन्न भिन्न कबहूँ जनि लेखहु ॥

दो० भक्त मोर मैं भक्तकर, सुनु अर्जुन ठहराय।
एक आतमा जानहू, तोसों कहौं बुझाय ७

अर्जुन कहैं सुनौ यदुराई। ये तो जानत हौं मन भाई ॥
भक्तहिं तुमहिं कछु अंतर नाहीं। यह तो बिदित अहै सब ठाहीं ॥
भक्त तुम्हार सदा हित आहीं। सो बिचार अपने मनमाहीं ॥

दो० जौन जौन गुण भक्तके, इनते परे मुरारि।
सावधान ह्वै स्वामि सो, मोहीं कहहु बिचारि ८

यह संशय तोहिं कहहुँ बुझाई। सुनहु सो अर्जुन तुम मन लाई ॥
सदा रहहुँ सन्तन के साथा। शंख चक्र गदा धरि हाथा ॥
और बात तोहिं कहौं बुझाई। मन बच कर्म सुनहु चितलाई ॥

दो० मोर भक्त मोहिं चित धरहि, नाम जपै दिन रात।
तेहि कारण सुनु अर्जुन, छोड़िसकौंनहिंसाथ ९

सुनु अर्जुन पूछौ जो मोहीं। औरहु कथा सुनाऊँ तोहीं ॥
भक्तहिं हमहिं एक करि मानहु। और बात कछुमननहिं आनहु ॥
अपने मन निश्चय करि लेखहु। जैसे पिता पुत्र करि देखहु ॥
जाके घर यक बालक होई। बिपति परेहु ना छांड़हि सोई ॥
पुत्र बाप कर जानै सोई। तेहि प्रतिपाल करै सब कोई ॥
सुतको पितु जो मानै नाहीं। बिपति परे तेहिं छांड़हि नाहीं ॥
भक्त हमार धर्म के बापू। तोहिं सों अर्जुन अहै न पापू ॥

दो० भक्त मोर जब बोलई, राधाकृष्ण मुरारि।
तेहि क्षण जिह्वा स्वर्ग से, उत्पति होय हमारि १०

अर्जुन बिनय करत कर जोरी। परब्रह्म सुनु बिनती मोरी ॥

जो तुम कहेउ सोई परमाना । आदि अन्त मोहित करिजाना ।।
श्रीमुख बचन मृषा को करई । हरि हर ब्रह्म मेटि ना सकई ।।
मैं मतिहीन न जानहुँ अन्ता । बल पौरुष तुमहीं भगवन्ता ।।

दो० दया करहु गोसाइँजू, बिनय करहुँ कर जोरि ।
तुम्हरे चरण कमलचित, सदा रहे मति मोरि ११

कहै गोबिन्द बचन हितकारी । सुनहु पार्थ तुम हृदय बिचारी ।।
हरि ब्रह्मादिक देव जो आहीं । मम भक्तनके पटतर नाहीं ।।
मैं जहँ जाउँ भक्त तहँ जाहीं । औरनके अधीन सो नाहीं ।।
चन्द्र सूर्य बायू अरु पानी । इनहूँ महिमा मोरि न जानी ।।
इन कहँ अगम कछू है नाहीं । भक्त मोर पहुँचे क्षणमाहीं ।।

दो० भक्त मोर मोहिं जानहीं, मैं तेहिं जानहुँ बीर ।
चरण कमल चित लागहीं, सो भाषहु यदुबीर १२

सुनु अर्जुन यह कथा सोहाई । आदि अन्त तोहिं कहहुँ बुझाई ।।
जनके मर्म सदा सुख रहही । भला बुरा कछु चित्त न अहही ।।
शंकर सुमिरि परम पदपावहिं । नारद ब्यास सदा गुण गावहिं ।।
चारिउ मुख ब्रह्मा गुण गावैं । सुमिरण करैं दर्श ना पावैं ।।
ऋषिमुनि योगी यतीजे आहीं । देव समस्त मग्न ह्वै जाहीं ।।
सुर नर मुनि आदिक गुणगावैं । आदि अंत कोइ पार न पावैं ।।
ध्रुव प्रह्लाद अमर पद पावहिं । भक्त हेतु प्रभु दर्श दिखावहिं ।।
कलियुग में सन्तन सुख कीन्हा । घर बैठे दर्शन प्रभु दीन्हा ।।
पीपा भक्त अरु मीराबाई । प्रेम सहित भेटेउ चितलाई ।।

रामानन्द कबीर गोसाँई । इनकी महिमा कही न जाई ।।

दो० जेते कलिमहँ भक्त भे, कहँ लगि करौं शुमार ।
सबकी आशा पूरई, यदुपति नन्दकुमार १३

गुरू बिरंचि बिष्णु गुरु आहीं । यामो अंतर है कछु नाहीं ।।
बृथा जन्म ताकर नहिं होई । गुरूशरण महँ जावै जोई ।।
श्रीस्वामी त्रिलोकके नायक । यदुनन्दन सन्तन सुखदायक ।।
सुमिरत राम सदा सुख पाई । अन्तकाल मुक्ती ह्वै जाई ।।
गुरू अहै जग सिरजनहारा । भवसागर में तारनहारा ।।
गुरुके बिना अधम गति होई । भला बुरा चीन्हे नहिं कोई ।।
नाव बिना केवट का करई । गुरुबिन भवनिधि कोउ न तरई ।।
गुरू बिना जो नर है कोई । बृथा जन्म ताकर जग होई ।।
गुरु बिन कोई अंत न जाने । देव धर्म कछु चित नहिं आने ।।
निगुरु हाथ पानी पिय जोई । मद्य सदृश जानहु जल सोई ।।
भक्तन के मुख मेरो बासा । हिरदे बैठ करौं परकासा ।।
जो कछु बिष्णु मोक्ष पद आहीं । जेतिक मानुष भजन कराहीं ।।
भक्त मोर छूवै जो कोई । तुर्त प्रापती मोकहँ होई ।।
जेहिमो भक्त न लावे हाथा । वही उछिष्ट कहै यदुनाथा ।।
सो हमकहँ पहुँचे नहिं काहीं । भक्त मोर पहुँचे क्षणमाहीं ।।
भक्त मोर जो भोग लगावैं । ह्वै प्रसन्न हम रुचि सों पावैं ।।

दो० ब्रह्मज्ञान जो मन्त्र है, भक्त हाथ सो आहिं ।
कहहु भक्त जो पावहीं, भलमन्दा कछु नाहिं १४

सुनु अर्जुन अमृत रसबानी । भक्ति भावतोहिं कहौं बखानी ॥
जो कर मम भक्तन मन्दाई । ताकर वंश नाश ह्वै जाई ॥
त्रय दिन तीन पक्ष बच जोई । तीन बर्ष महँ बचे न सोई ॥
जो इतने महँ दंड न देऊँ । चक्र गदा फिरि हाथ न लेऊँ ॥

दो० भक्त कष्ट मोहिं ब्यापई, रोम रोम सब अंग ।
तेहिकारण सुनु अर्जुन, छांड़िसकौं नहिं संग १५
श्री स्वामी जगजीवन, दीनबन्धु नँदलाल ।
इतना गुण कहि भक्त पर, दया करो गोपाल १६

सुनु अर्जुन मैं कहौं बिचारी । तुम तो मोर प्राण हितकारी ॥
जो हम कहहिं सत्य है सोई । पूर्व पुण्य बिन भक्ति न होई ॥
पद्मपत्र जौनी बिधि बिकसे । भक्त हृदय भक्ती तिमि निकसे ॥
उत्तम भक्ति उदित जब होई । बैष्णव नाम पाव तब सोई ॥
तेहि महँ गुरु मुख सदा कराई । चरण छुवत पातक छय जाई ॥

दो० रिस ना करो गोसाईं, चरण छुवत हौं श्याम ।
केतिक गुरु करिये प्रभू, केतिक लीजिय नाम १७

यह सुनि हर्षि कह्यो बनवारी । देखहु अर्जुन मनहिं बिचारी ॥
एकै गुरू बिष्णुसम आहीं । तीनलोक तिन पटतर नाहीं ॥
एकहि नाम सदा चित देहीं । चौदह भुवन बश्य कर लेहीं ॥
गुरु सोई जो लागेउ काना । तेहिको जानहु बिष्णु समाना ॥
सोई परम तत्त्व करि जाने । और बात कछु चित्त न आने ॥

गुरु को मंत्रमूल जो कोई । मुखते सिखे दोष नहिं होई ॥
सत्यगुरू करिये दुइ चारी । ज्ञान गुरू सब सीख बिचारी ॥
आन गुरू सुख कान जो लागै । कोटि जन्म शिरपातक लागै ॥
चौगुण पाप गुरू कहँ होई । माया लोभ करै जो कोई ॥
गुरू शिष्य जानै भल कीन्हा । यम के पाश हाथ महँ लीन्हा ॥

दो० अर्जुन कहा गोसाइँजू, कैसे जिव पतिआइ ।
गुरू कान जेहिं लागसो, कैसे यमपुर जाइ १८

सुनु अर्जुन तोहिं कहौं बुझाई । ज्यों तुम्हार जीवहु पतिआई ॥
पुत्र आनकर आपन करई । सो प्राणी कैसे निस्तरई ॥
जैसे त्रिया सोहागिन होई । स्वामी छोड़ और सँग सोई ॥
पहिले दुइ कुल नाश करावै । जहां जाय तहँ अपयश पावै ॥
जगमें यश येको नहिं पावै । प्राण अन्त यमलोक सिधावै ॥
दुइ नौका पग देय जो कोई । मँझधारा में डूबे सोई ॥
प्रथम मन्त्र को गुरु जो दीन्हा । तेहिते नेम धरम ना चीन्हा ॥
अवरो मन्त्र देइ जो कोई । तो जग माहिं दोष तेहिं होई ॥

दो० यह सब दोष गुरू कहँ, शिष ना माने कोय ।
कुम्भीपाक नरक महँ, निश्चय जावै सोय १९

सुनु अर्जुन मन निश्चय कीजै । कथा रसाल श्रवण सुनि लीजै ॥
नाना बेद पढ़े जो कोई । गुरुमुख बचन समान न होई ॥
गुरु कहँ पूछ जाय जहँ जाने । भव चिंता हिरदे नहिं आने ॥
चार बेद मुख पाठ बखाने । अन्तर्गत मोहीं नहिं जाने ॥

पढ़त पढ़त सब जन्म गँवावै। नाम कि महिमा जानि न पावै ॥
निश्चयनाम जो चितहिं लगावै। क्षण इक भजै परमपद पावै ॥
सिद्ध समाधि लगावै जोई। नाम कि महिमा जानत सोई ॥
भूमि समान दान जो करई। योजन लक्ष नाम सो धरई ॥

दो० तीरथ ब्रत अरु यज्ञ करि, बहुत बिचारैं बेद।
सहस्र योजन नामते, जाइ रहा सब भेद २०

जिन ब्रह्मा सब सृष्टि सँभारी। नाभि कमलते भये हमारी ॥
ब्राह्मण होय बेद सब पढ़हीं। मोर नाम जो चित मो धरहीं ॥
बिद्या बेद न भूले सोई। भोजन रस जानै कस होई ॥
श्वपचौ भक्त मोर जो होई। तेहिसमान अर्जुन ना कोई ॥
यह संसार राम से भयऊ। कोटिकोटि युग बीतत गयऊ ॥
बिष्णु कि माया यहि संसारा। राम नाम ते छुटहिं कुमारा ॥
सुनु अर्जुन मैं कहौं बखानी। नामकि महिमा हमहुँ न जानी ॥
प्रथमहिं यह भाषौं मैं तोहीं। नाम भजै सो भेंटै मोहीं ॥

दो० कहत खोरि मोहिं लागई, सुनहुबचन भगवान।
महिमा तुम्हरे नामकी, कैसे जानहि आन २१

सुनु अर्जुन तैं मन दृढ़ लाई। यह संशय तोहिं कहौं बुझाई ॥
तीरथ बर्त करै नर जोई। अमित पुण्य फल पावै सोई ॥
आसन बैठि मोर गुण गावै। कोटि तीर्थ तेहि ठौरहि पावै ॥
लक्ष्मी सती अंगमों आहीं। नाम कि महिमा जानत नाहीं ॥

दो० चन्द्र सूर्य अरु पवनजल, नवग्रह सकल नछत्र।
माया मोरि न जानहीं, कोटि जपैं जो मन्त्र २३

अब सुनु अर्जुन कहौं बखानी। राम नाम अमृत रस बानी ॥
नामसुमिरि शिवअमरजो भयऊ। जरा मरण कर संशय गयऊ ॥
नामस्मरण अहीश जो कीन्हा। तिल समान धरतीधरिलीन्हा ॥
रामनाम सुमिरण ध्रुव कीन्हा। पदवीअचल तेहि कारणदीन्हा ॥

दो० रामनाम निश्चय करि, जानहु कुन्तिकुमार।
चारि बेदमों अर्जुन, दुइ अक्षर हैं सार २३
गोपीरमण गोसाइँजू, यदुपति नन्दकुमार।
कविता अस्तुति भाषहूँ, प्रभुमोहिंकरहुउधार २४

श्रीगुरु बिष्णु के चरण मनाऊँ। जेहि प्रसाद गोबिन्द गुण गाऊँ ॥
धन्य गुरू जिन बिद्या दीन्हा। जेहि प्रभाव गोबिन्दहिं चीन्हा ॥
गुरू बिना कछु धर्म न होई। कोटि प्रकार करे जो कोई ॥
गुरु की दया गोबिन्दहिं भेटै। जन्म जन्म के पातक मेटै ॥
गुरू जाहिके सम्मुख होई। क्षणमहँ तर भवसागर सोई ॥
गुरुकी महिमा कहत न आवै। जो गुरु कहैं सोई फल पावै ॥

दो० जगन्नाथ गुरु देव हैं, जिन्ह यह बिद्या दीन्ह।
जिनकेचरणकीरेणुका, कुशलासिंह सोलीन्ह २५

अर्जुन बात कहत बिलगाई। बीचहिं सब करि स्तुति लाई ॥

कुशलसिंह भक्तन के दासा । प्रभु के चरण रेणु की आशा ।।
बेद पुराण पढ़े कछु नाहीं । योगसमाधि ज्ञान कछु नाहीं ।।
एक समय मोहिं इच्छा कीन्हा । गुरु जो मोकहँ दर्शन दीन्हा ।।
अस कछु दया कीन्ह गोसांई । प्रभु की महिमा करों बनाई ।।
इतो कहत मोहिं आलस भयऊ । आई नींद भूमि परि गयऊ ।।
सोवत समय परीक्षा पाई । गुरु कर रूप ठाढ़ भे आई ।।
कहेउकिशोच करसि जनिबारा । हमनिश्चयकरि ज्ञान बिचारा ।।
चरण धोय चरणामृत लीन्हा । यहि अन्तर बोधन कछु दीन्हा ।।
उठि बैठेउ कोउ दीख न पासा । भीतर ज्ञान हृदय परकासा ।।
रोम रोम पुलकित भइ काया । भयो ज्ञान कछु गुरु की दाया ।।

दो० गुरु जो शिक्षा दीन्हेउ, गीता ज्ञान अपार ।
सब मिथ्या करि जानेऊ, एक नाम है सार २६

गुरु की अस्तुति पूरण भयऊ । कहत सुनत पातक सब गयऊ ।।
अर्जुन कहत बिनय करि सेवा । सुनहु बचन देवन के देवा ।।
श्री गोबिन्द गोबर्धनधारी । गोपीबल्लभ देव मुरारी ।।
श्री त्रैलोक्य के अन्तर्यामी । भक्तन हेतु निरंतर स्वामी ।।
केहि बिधि ते गति होइ गोसांई । सो यह सांच कहो यदुराई ।।
बहु पापी दोषी मैं सोई । भाषहु सो नहिं राखहु गोई ।।

दो० केतिक पाप करै नर, कौन दण्ड है ताहिं ।
गीता हृदय बिचारिकै, प्रभुभाषो मोहिंपाहिं २७

अर्जुन सुनो कहौं मैं तोहीं । जो अति हितकरि पूछेहु मोहीं ।।

शत पाप प्राणी जो करहीं । लज्जित ह्वैयदुपति अस कहहीं ।।
सहस पाप मुख बाहर होई । बचन कहै बूझै ना कोई ।।
यह लख पाप करै नर जोई । कंचन काया कुष्ठी होई ।।
दश सहस्र पातक जो करहीं । दुःखी रोग ग्रसित ह्वै मरहीं ।।
कोटि पाप करि अंधा होई । भला बुरा चीन्हे ना सोई ।।
एते पाप को यह फल भाई । बधिरहोय नहिं श्रवण सुनाई ।।
यतना पाप वर्ण जो करहीं । घर घर भिक्षा मांगत फिरहीं ।।
मांगै भीख न पावै प्रानी । ताके पाप को लेख न आनी ।।
ताके पाप करै जो लेखा । सो अर्जुन आंखिन नहिं देखा ।।

दो० जैसा पाप करै नर, तस पावै सन्ताप ।
श्रीमुखबचनसुनाजब, अर्जुन मनमें ब्याप २८

सुनि अर्जुन चरणन चित दीन्हा । करिनिश्चययह बिनतीकीन्हा ।।
इन पापन कर यह फल होहीं । औरो पाप कहौं मैं तोहीं ।।
पाप कोटिदुइ करै जो प्रानी । संतति हीन अधमकरि जानी ।।
ताकर मुख भोरहिं ना देखे । महापाप अपने शिर लेखे ।।
जो मुख देख करै असनाना । द्वादशपल सोना दे दाना ।।
अन्त की बात कहब ना ताहीं । महिमा कछु यक बवरा आहीं ।।
तेहि के बचन उतर जो देई । महापाप अपने शिर लेई ।।
दुइ अस्नान करै जो कोई । तब तेहिं पापते छूटै सोई ।।
शुभकारज बोले जो कोई । निश्चय कार्य नाश तो होई ।।
सुनु अर्जुन जो पूछहु मोहीं । औरो बचन कहब मैं तोहीं ।।

दो० अर्जुन कहत बिचार के, सत्य कहौ यदुराय ।
अपुत्रीक प्राणीन कर, जन्मअकारथ जाय २९

अर्जुन सों बोले यदुराई । अमृत बचन सुनो मनलाई ॥
मोर बचन अन्तर सुख पावैं । ताहि मन्त्र मैं सदा पढ़ावैं ॥
अपुत्रीक धर्म अन्त ना आहीं । सात जन्म यमदण्डै ताहीं ॥
अवगुण कोटि कहांलगिकहई । ताकर भार भूमि ना सहई ॥

दो० महापातकी ताहि कह, जानहु कुन्तिकुमार ।
जन्म जन्म दुख पावहीं, तरै न यहि संसार ३०

अर्जुन बिनवै दोउ कर जोरी । सुनहु नाथ यक बिनती मोरी ॥
यदुपति सर्ब पूज्य भगवाना । सबको जानहु एकसमाना ॥
निर्बंशी जेतक जग आहीं । धर्मवन्त कोउ अहै कि नाहीं ॥
भला बुरा सब हैं यहि ठाई । सबकर भेद कहौ यदुराई ॥

दो० उत्तम मध्यम नीच के, कहौ भेद मोहिं पाहिं ।
तुमहिं बिना जगजीवन, औरहिं पूछहुँकाहिं ३१

सुनु अर्जुन मम ज्ञान बिचारी । यह सँसार तोहिं पार उतारी ॥
जो शंका तुम पूछहु मोहीं । सब बृत्तान्त कहौं मैं तोहीं ॥
अपुत्रीक प्राणी जो होई । सत्संगति पावै नहि सोई ॥
भाव भक्ति जो चितमहँ धरहीं । निश्चय ज्ञान हृदयमहँ परहीं ॥
भाव भजन महँ जो चितलाई । ताकर पाप क्षय ह्वै जाई ॥

कोइ कथा जो मोरि चलावै । तहाँ जाय निश्चय चित लावै ॥
भक्त हमार जहाँ गुण गावै । तिनके चरणन शीश नवावै ॥
धर्म कर्म महँ निश्चित रहहीं । मुक्ति होइ संशय नहिं अहहीं ॥
सर्ब जीव महँ करुणा राखे । सत्यहिं बोलै झूठ न भाखे ॥
काम क्रोध को चित्त न धरई । गो ब्राह्मण की रक्षा करई ॥
मोर नाम जो चित महँ धरहीं । भवसागर सो क्षण महँ तरहीं ॥
हिरदय सदा मोर गुण गावै । अपुत्रीक बैकुण्ठ सिधावै ॥
औरो बात कहौं मैं तोहीं । हिलै न तृण बिनु आज्ञा मोहीं ॥

दो० अपुत्रीक सुनु अर्जुन, जेतिक जग महँ आहिं ।
तिनमहँ जो मम भक्तहैं, सो बैकुण्ठहि जाहिं ३२

अर्जुन भाषै दोउ कर जोरे । संशय यक उपजा चित मोरे ॥
जन्म तो आखिर जगमहँ होई । पाप किये बिन रहै न कोई ॥
ताते मोहिं भयउ सन्तापा । कैसे देह होय निष्पापा ॥
पापिन नाम कहौ समुझाई । तिनकर पाप कौन बिधिजाई ॥
और बात तोहिं पूछौं स्वामी । तीन लोक के अन्तर्यामी ॥
गोहत्या प्राणी जो करई । केतिक दिनमें सो निस्तरई ॥
नारीहत्या जो नर करई । सो प्राणी कैसे निस्तरई ॥

दो० यह संशय जगदीश जू, मो मन उपजो आय ।
भिन्नभिन्नकैस्वामि जू, सोमोहिंकहौबुझाय ३३

अर्जुन सुनहु एक चितलाई । सब बृत्तान्त कहौं समुझाई ॥

गोहत्या प्राणी जो करई । ज्ञान ध्यान कीन्हें निस्तरई ।।
तीरथ बर्त करै तप जाई । युग बीते बिन पाप न जाई ।।
त्रियहत्या पातक अधिकाई । चारों युग बीते क्षय जाई ।।

दो० इनकर यह ब्यवहार है, सुनु अर्जुन चितलाय ।
ऋणहत्याअतिकठिन है, दियेबिनानहिंजाय ३४

अर्जुन कहै सुनो यदुराइ । ऋणहत्या कौनी बिधि जाइ ।।
दिये बिना ऋण छूटत नाहीं । तेहिमें यक ब्यवरा जो आहीं ।।
साधु पुरुष ऋण काढ़े जोई । दण्ड भये बिन बचे न सोई ।।
हम लवलीन प्राणि जो रहई । ऋण चिन्ता निशि बासर करई ।।
साधु सङ्ग महँ मो गुण गावै । प्रेम भक्ति हिरदे में लावै ।।
एक चित्त जो मोपर राखे । भला बुरा नहिं मुखते भाखे ।।
साहुको आवत देखे जबहीं । बिमुख होय रहे नहिं तबहीं ।।
भाव भक्ति से सबको लावै । मांगै द्रब्य और कछु पावै ।।
कछुमो कछु ऋण सोचत जाई । जो कछु जुरै सो दे पहुँचाई ।।
धाय धूप ऋण योग्य न पारा । तेहि को दोष न कुंतिकुमारा ।।
जेहि के चित्त सदा अस आहीं । टूटे ऋण संशय कछु नाहीं ।।
साहु सो सांच रहे मनमाहीं । मन्द होय तो पहुँचै ताहीं ।।
तेहि प्राणी को यम नहिं लेहीं । आगल जन्म सुखित सो देहीं ।।
साहूकर जो धरता होई । अवर जन्म ऋण पावै सोई ।।
साहु जो ताकर धरता होई । तो पाये खाये सुख सोई ।।

दो० ऋणकर यह बृत्तान्त है, सुनु अर्जुन चितलाय ।
जहां आश है जाहिकर, तहां देउँ पहुँचाय ३५

अर्जुन कहै सुनो भगवाना । यह तो उत्तम कर परमाना ।।
उत्तम बुधि ऋण करजा होई । पुनि उत्तम गति पावै सोई ।।
ऋण काढ़े अस पापी जाना । सो कस गति पावै भगवाना ।।

दो० धर्मवन्त ऋण काढ़ई, पायउँ ताकर अन्त ।
पापीजन जो लेइ ऋण, कहौ तासु बिरतंत ३६

अर्जुन सुनो एक शुभ बानी । यह बृत्तांत तोहि कहौं बखानी ।।
ऋण को काढ़ि दान दे कोई । मिथ्या अहै उचित नहिं सोई ।।
ऋणकाढ़ै पाले परिवारा । सो मिथ्या नहि आय कुमारा ।।
ऋण काढ़े झूठा प्रण करई । नीच प्रसंग नारि परिहरई ।।
चीकन चाकन फिरै उतंगा । नारि छांड़ि बेश्या परसंगा ।।
साहुको आवत देखे जबहीं । बदन छिपाय रहे पुनि तबहीं ।।
खाय पिये ऋण देत न जाही । निशिदिन यमकर पाश रहाहीं ।।
यमकर दूत सदा सँग रहई । थोरे दिन पीछे वह मरई ।।
प्राण अन्त तेहि यम ले जाई । तेहि कर अस्तुति करन बनाई ।।
चमरा कोड़ाकेठ लगावै । पंथ मोहि घसिलावत लावै ।।
पहिले लै सेमर में बाँधे । तप्त फार तेहि मुखमें सांधे ।।
लोह कि लाठी से पिटवाई । अंग अंग कांटा चुभवाई ।।
तहँवांते पुनि तेहिलै आवैं । तावापर पुनि ताहि बिठावैं ।।

तेहिके तर पुनि आग लगावैं । ऊपर तेल आनि ढरकावैं ॥
कष्ट अनेक देहिं तेहि भारी । नरककुंडमें राखहिं डारी ॥

दो० केतिक दिनतेहिनरकमहँ, तहँतेकाढ़िपुनिलेहिं ।
दंड भंड पुनि करके, जन्मनीचघर देहिं३७

पुनि वह जगमें से निस्तरई । धरता होय वही सो मरई ॥
और बात सुनु कुन्तिकुमारा । तेहि प्राणी कर यह व्यवहारा ॥
सुनु अर्जुन औरो कछु भाखों । मैं तुमसों कछु अंत न राखों ॥
आधा अंग मोर ते आई । तेहिते अंत कहौं समुझाई ॥
तीनलोक मेरे उर माहीं । सब कर तन्त्र मन्त्र मोहि पाहीं ॥
यह संसार जहां लग होई । मम आज्ञा बिनु अहैं न कोई ॥
नित उठ भोजन सबको देऊं । सबकी खबर सांझ की लेऊं ॥
जौन अहार जन्तु जो खाई । ताकर तैसे देउँ पहुँचाई ॥
मम आज्ञा बिन आन न पावै । कोटि भांति नर युक्ति बनावै ॥
सबके आश हमारी आहीं । सुनु अर्जुन तोसों सत काहीं ॥
कीट पतंगमें बास है मेरा । मैंहीं हों रक्षक सब केरा ॥
जहँलग जीव जगत में होई । छोटबड़ा बाचै ना कोई ॥
सबके घट में मोर बसेरा । धर्म पापकी करौं निबेरा ॥
छोट जीवमें छोट बसेरा । बड़े जीव में बड़े बसेरा ॥

दो० एक आतमा जानहू, दूसर तिहुँ पुर नाहिं
कहीं गुप्त कहिं प्रगटहै, सुनुअर्जुन मनमाहिं३८

अर्जुन कहै दोउ करजोरी । आदि अन्त शरणागत तोरी ॥
श्रीयदुपति त्रिभुवन के कर्ता । दुष्टदलन सन्तन सुखकर्ता ॥
आदि अन्त भक्तन भयहारी । सबमें व्यापित देव मुरारी ॥
जो तुम कहा सोइ मैं जाना । औरहु कथा कहो भगवाना ॥

दो० धर्म जन्म कवनी बिधि, कवने जन्मे पाप ।
सो स्वामी कहि देहु मोहिं, उपजा बड़ संताप ३९

अर्जुन बात कहांलगि जानसि । खोजि २ सब अर्थन आनसि ॥
जउनि बात तैं पूछेहि मोहीं । सबकर भेद कहौं मैं तोहीं ॥
धर्मजन्म जेही बिधि होई । सुनु अर्जुन बर्णों मैं सोई ॥
सत्यते धर्म उग्रयश होई । दया करै तो जन्मै सोई ॥
क्षमाते धर्म बल यश रहई । लोभ तेज तो बैठें अहई ॥
काम बस्तु संपूरण होई । उत्तम गति पावै पुनि सोई ॥

दो० अर्जुन कहा गोसाइँजू, संशय छूटत नाहिं ।
लोभकामसंसार में, कवन करत प्रभु आहिं४०

जो अर्जुन तुम पूछेहु मोहीं । निर्णय याहि सुनाऊँ तोहीं ॥
कामी पुरुष जगत में होई । नारी अपनी भोगै सोई ॥
परनारी के संग न जाई । सांच बचन ये हैं सुनु भाई ॥
माया अपनी खाय खिलावै । परकी देखि न चित्त डोलावै ॥
यह दुइ पाप संपूरण होई । सुनु अर्जुन निश्चय चितलोई ॥

प्रथममें पाप क्रोध जनवावा । दया बिना सो बड़ा कहावा ।।
इतना जानि नहीं जो माने । अर्जुन सो चाण्डालहि जाने ।।

दो० यहि बिधि जानो अर्जुन, पाप पुण्य उत्पाति ।
तुमतो मोरे प्राण हित, कहौंभेद बहु भांति४१

अर्जुन ठाढ़ भये प्रभु आगे । श्रीगोबिंदके चरणन लागे ।।
श्रीयदुनाथ राखि मोहिं लीजै । यह संसार पार प्रभु कीजै ।।
एक बात कर संशय आहीं । रिस ना करब सहब हक पाहीं ।।

दो० बेदनबिषै बिचारिकै, मोहिं कहो नँदलाल ।
कवन कर्मके कीन्हे, प्राणी हो चण्डाल ४२

अर्जुन सुनहु कहत भगवाना । इतनी बात सुनहु परमाना ।।
ब्राह्मण ब्रह्मकर्म नहिं राखे । देवलोक सबहीं प्रति भाखे ।।
बिना दतूनि जो भोजन करई । सो चण्डाल कृष्ण असकहई ।।
देवन पूजे बिन पगु धोये । अर्जुन सुनु चण्डाल है सोये ।।
जाकर मातु पिता बृध होई । सेवा करे पुत्र ना सोई ।।
तेहिको तुम मृतक करि जानहु । अर्जुन सो चण्डालहि मानहु ।।
पूरण गर्भ मारि कर धरई । ताकर पुरुष संग जो करई ।।
हत्यातुल्य पापहै ताहीं । अर्जुनसुनु चण्डाल सो आहीं ।।
आगि लगावन देइ जराई । सुरापान निशि बासरवाई ।।
महापाप निश्चय सो जाना । सो अर्जुन चण्डाल समाना ।।
बच्छा गाय बिछोह करावै । सो प्राणी चण्डाल कहावै ।।

अर्जुन सों कहहीं नँदलाला । पक्षिनमें कागा चण्डाला ।।
पशुवनमें गर्दभकी जानी । बनस्पतिनमें ताड़ बखानी ।।
पानी पियत गाय खेदवावै । सो प्राणी चण्डाल कहावै ।।
तेल लगाय न करे अस्नाना । सो प्राणी चण्डाल समाना ।।
रति कर जो न करै अस्नाना । सो प्राणी चण्डाल समाना ।।
सुनु अर्जुन सो पूछेहु मोहीं । यह तो भेद कहा मैं तोहीं ।।

दो० अर्जुन कहा गोसाइँजू, यह जानत कछु नाहिं ।
कवन दान के दीन्हे, कवन पुण्य है नाहिं ४३
अधम उधारन स्वामिजू, निश्चय नाम तुम्हार ।
तुमहीं जगके जीवन, प्रभु मोहिंकरोउधार४४

श्रीगोबिन्द युक्ति उपजाई । पूछेउ अर्जुन भेद बताई ।।
हित करि अर्जुन पूछेउ मोहीं । दान कि बिधि भाषहुँ मैं तोहीं ।।
दश गोदान देइ जो कोई । एक धेनु फल पावै सोई ।।
धेनुदान दश दे जो कोई । सांड़ एक दीन्हे फल होई ।।
दान सांड़दश दिये जो कोई । ब्यापक एक दिये फल होई ।।
दश ब्यापक दान करै जो कोई । कन्यादान दिये फल होई ।।
दश कन्यादान देइ जो कोई । बिगहा भूमि दिये फल होई ।।
दश बिगहा भूमि दान जो देई । ज्ञान ध्यान फल पावै सोई ।।
दानध्यान कहि ज्ञानके लेखा । आसन उपकर सुनियबिशेखा ।।

दो० जेतिक दान करे नर, तेहि फल पावै सोइ ।
शालग्राम के दान सम, औरदाननाकोइ ४५

तेहि क्षण अर्जुन सेवा लाई । दान कि बिधि जानहु यदुराई ।।
जो श्रीमुख प्रभु कहा बखानी । सो मैं जानेउँ शारँगपानी ।।
जगन्नाथ जगतन के सारा । पतित उधारन नाम तुम्हारा ।।
उर धरि नाम पतित तरि जाहीं । आवागमन तिनकेर नसाहीं ।।
होय प्रसन्न शरण मोहि राखहु । बिनतीकरौं और कछु भाखहु ।।
केहिकर शुभ आसन प्रभु होई । नाम तुम्हार करैं जप सोई ।।

दो० काहे के आसन प्रभु, जपै नाम यदुराइ ।
भिन्न भिन्न करि स्वामी, सोमोहिंकहहुबुझाइ ४६

सुनु अर्जुन निश्चयकै भाखौं । सो तुम निज हिरदे मों राखौं ।।
आसन भेद जो पूछेउ मोहीं । सो सब भेद कहौं मैं तोहीं ।।
बस्तर आसन ध्यान लगावैं । दुखी होय कछु फल ना पावैं ।।
पत्थर आसन जपै जो कोई । सुनु अर्जुन सो रोगी होई ।।
भूमी आसन जपै जो कोई । ताको कछु पुनि पाप न होई ।।
यहि आसन कर यह गुण होई । निश्चय अर्जुन मानो सोई ।।
अवरौ आसन सुनो कुमारा । उत्तम गति पावैं संसारा ।।
मृगछाला आसन बैठावै । करै भजन मुक्ती गति पावै ।।
जेहि घर बैठि जपै मम नामा । सुत कलत्र देऊँ धन धामा ।।
मुनिन केर आसन जो आहीं । मानुष महिमा जानत नाहीं ।।

कुश आसन जो ध्यान लगावै । ज्ञानी होय सिद्ध फल पावै ।।
कामक्रोध तजि ध्यावै जोई । नेम धर्मफल पावै सोई ।।

दो० तब अर्जुन कर जोरिकै, कहा सुनो यदुराय ।
सदा संयोग न पावै, ताको कौन उपाय ४७

कृष्ण कहहिं अर्जुनहिं बुझाई । सदा सँयोगआसन नहिंपाई ।।
तेहिकर जो जो अहै परकारा । सो मोसे सुनु कुन्तिकुमारा ।।
तृण यक जहां तहांते लावै । द्वादश अँगुल प्रमाण बनावै ।।

दो० अर्जुन कहा गुसाइँजू, इतना करै जो कोय ।
भक्तिभाव जो जानहीं, तबहिं उचित है सोय ४८

अर्जुन कहै दोउकर जोरी । औरौ कछु बिनती प्रभु मोरी ।।
आसन बिधि पूछेउँ भगवाना । तुम प्रसाद पायेउँ ब्रह्मज्ञाना ।।
भजन भेद भाषौ यदुराई । कौन भांति कौने फल पाई ।।
सो मोहिं भाषौ नंदकुमारा । तुमसे बचन कहौं निरुवारा ।।
कौनी माल कौन फल होई । सो मोहिं कहौ न राखौ गोई ।।

दो० सुनहु स्वामि जगजीवन, यदुपति नन्दकुमार ।
भजन भेद नहिं जानहुँ, श्रीमुखकहोबि चार ४९

सुनु अर्जुन निश्चय चितलाई । भजन भेद तोहिं कहौं बुझाई ।।
अंगुलि रेख भजन जे करई । अष्टगुणा फल पाकर तरई ।।
मोतिन माल भजै जो कोई । दशगुण फल तेहि नरको होई ।।

शंख मणि माल जपै जो कोई । द्वादश गुण फल ताको होई ॥
कमलमाला जपै जो कोई । सहस्र गुणा फल ताको होई ॥
सुबरणमाल जपै जो कोई । एक कोटि फल ताको होई ॥
कुशगांठी मालाजपै जो कोई । दशकोटी फल ताको होई ॥
जपै पद्मफल माला कोई । पन्द्रहलक्ष ताहि फल होई ॥
चन्दन माला जपै जो कोई । दश सहस्र कोटी फल होई ॥
रुद्राक्ष माला जपै जो कोई । बारह कोटि ताहि फल होई ॥
तुलसी माला जपै जो कोई । ताकरफलमोहिंगिनति न होई ॥

दो० भजन भेद सब भाषेहुँ, सुनु अर्जुन चित लाइ ।
औरहु कछु जो पूछहु, सो मैं कहौं बुझाइ ५०

अर्जुन कहै सुनौ बनवारी । अवरौ कहौं पिताम्बरधारी ॥
केहिके छुये दोष है स्वामी । सो बिचारि कहु अन्तर्यामी ॥
मैं कछु नहि जानौं अज्ञाना । तव परसाद भेद सब जाना ॥

दो० ह्वै प्रसन्न प्रभु भाषहू, हृदय करोजनि रोष ।
केहिके छूये कौन बिधि, ताको लागत दोष ५१

सुनु अर्जुन तू यक चितलाई । यह संशय तोहिं कहौं बुझाई ॥
मक्खी विष्णु अंश जो आही । तेहि बैठे कछु दोष न आही ॥
देवन के भोजन छुइ जाई । है निश्चिन्त सो भोग लगाई ॥
भक्ष्याभक्ष्य मँजारी खाई । वोही मुख भोजन छुइ जाई ॥
यहिबातन कछु देखि न आवै । ह्वै निश्चिन्त सो भोग लगावै ॥

निज नारी सँग शयन जो करही । अंतमिले कछु दोषन अहही ॥
बात कहत मुख थूक जो परई । तेहिकर दोष कछू नहिं अहई ॥
हाथ एक तृण रोषे जोई । चाण्डाल मानव सो होई ॥
अर्जुन सत्य सुनो हम पाहीं । तेहिकर दोष कछू नहिं आहीं ॥
अर्जुन कहैं सुनो भगवाना । एक वृक्ष पर आछो जाना ॥
ब्राह्मण चढ़ि शूद्र चढ़ि जाहीं । ताकर दोष कहौ हम पाहीं ॥
अर्जुन बात सुनो हम कहहीं । तेहिकर दोष कछू नहिं अहहीं ॥
नाव एक दिशि हाँडी होई । अन्न रांधि खावै जो कोई ॥
तेहिकर दोष कछू नहिं अहहीं । निश्चयबचन कृष्ण जो कहहीं ॥
ब्राह्मण केरि नारि जल देई । भिक्षा अपने बासन लेई ॥
दोष अहै कृष्ण अस कहहीं । द्वादशअंगुलबीच जो रहहीं ॥
सेजभूरिपर सोवत आही । यक चण्डाल शूद्र जो होई ॥
बाजी पीठपर बैठे सोई । ताकर दोष कछू ना होई ॥

दो० भजन भेद सब भाषेउँ, सुनु अर्जुन चितलाय ।
अवरहु कछु जो पूछहू, सो मैं देहुँ बताय ५२

अर्जुन बात सुनो चित लाई । राम नाम ते सब सुख पाई ॥
निश्चय मम जो हृदय में जाने । और बात कछु चित्त न आने ॥
जो जानै मोहिं हिरदे माहीं । ताकर धन्य हृदय तनु आहीं ॥
जो प्राणी मोहिं चित नहिंलावैं । मृतकसमान मोहिं का भावैं ॥
साधू संग सुलभ सुख पावै । देखत ही दुख शूल नशावै ॥

दो० अर्जुन छोड़्यो कपटसब, भज्योभक्ति भगवन्त ।

आधा अंग हमार है, अब भाष्यो सब अंत ५३

अर्जुन कहै सुनो भगवाना। तुमहिं छांड़ि ना जानौं आना॥
नाम अधार अहै प्रभु मेरे। निशि बासर ध्यावों कर जोरे॥
मोरि सेव जाने मनमाहीं। औरौ कछु शंका मनमाहीं॥
पाप पुण्य सब यहि संसारा। अस्तुतिको करि सकै तुम्हारा॥
इन कर भेद कहो यदुराई। जिन कर बंश नाश होइ जाई॥

दो० कवन पापते स्वामिजू, बंशनाश होइ जाइ।
कृपा करो गोसाइंजू, सो मोहिं कहुयदुराइ ५४

सत्य बचन सुनु कुन्तिकुमारा। यहि बातन कर करो बिचारा॥
जौन नारि के सत ना रहई। निशिदिन पर पुरुषनमनधरई॥
श्रीस्वामी को चित ना लेवे। बात कहत उत्तर ना देवे॥
पहिले दुइकुल अपयश पावै। प्राण अन्त यमलोक सिधावै॥
अवर कथा सुनु अर्जुन सोई। बंश नाश जेहि कारण होई॥
सत्य बचन बोले नहिं प्यारा। चित मो बसै पराई दारा॥
सभा बैठि परनिन्दा करई। कान लगाइ कै नृप सो कहई॥
परधन काढ़ि द्रब्य जो देई। सो सन्ताप आपनो लेई॥
जो परार लइ सुख सो खाई। ताकर बंश नाश होइ जाई॥
अर्जुन कहैं सुनो यदुराई। ठाकुर होय जो कर मन्दाई॥
ऊंच नीच ना करे बिचारा। सदा अनीति संग परदारा॥

दो० परजहिं सदा सतावई, पाप पुण्य नहिं जान।
बंश नाशहोइताहिकर, सुनु अर्जुन अज्ञान ५५

अर्जुन सुनो एक चितलाई। जेहिघर गाय होइ अधिकाई॥
गर्ब करै तो सकै न राखी। रोगब्याधि जो गायनब्यापी॥
ताकर बंशनाश होइ जाई। सुनु अर्जुन तू मन चितलाई॥
तुम अर्जुन जो पूछेउ मोहीं। आदि अंत समझावों तोहीं॥

दो० अर्जुन कहा गोसाइँजू, पायउँ सबको अंत।
पांच रत्न जग कहतहैं, बर्णहु सो भगवन्त ५६

श्रीगोबिन्द कहैं शुभ बानी। सुनु अर्जुन तोहिं कहौं बखानी॥
ठाकुर होइ सबको सुख देई। दुख संकट अपने शिर लेई॥
मीठ बचन सो सब दिन भाखै। दया धर्म हिरदे में राखै॥
भाव भक्ति सो भाषण करई। करैं सहाय बचन शुभ करई॥
परे अकाल प्रजा प्रतिपालै। दुःखपरै तो सत्य न घालै॥
शक्ति होइ तो दे पहुँचाई। आश निराश कबहुँ ना जाई॥
ब्राह्मण गाय की रक्षा करई। नेम धर्म अपने मन धरई॥
उत्तम नारि गाँव में देखै। जस कन्या अपने घर लेखै॥
दंड भंड करि कछु ना लेई। पापिकि द्रब्य कबहुँ ना लेई॥

दो० यहि लक्षणकर ठाकुर, भक्तिभाव कछु जान।
एक रत्न सो अर्जुन, सत्य कहैं भगवान ५७

और रत्न सुनु कुन्तिकुमारा। तोसों बचन कहौं निरुआरा॥
जौन क्रिया निश्चल चित होई। धर्म कर्म चित राखै सोई॥
स्वामी केरि करै नित पूजा। और पुरुष नहिं जाने दूजा॥
माता पिता स्वामीकर होई। अपनोई करि जानै सोई॥

ब्राह्मण गाय देव सम जानै । भक्तिभाव करि आदर मानै ॥
भक्तन देखि बिष्णु सम जानै । यह अपने मन निश्चय आनै ॥
भिक्षुक आय निराश न जाई । जो कछु जुरै सो देइ मंगाई ॥
पतिब्रता सो सती कहावै । आपु तरै दुइ कुलन तरावै ॥

दो० यहि लक्षणकी भामिनी, सुन अर्जुन चितलाय ।
एकरत्न सो जगतमहँ, सत्य कहैं यदुराय ५८

अर्जुन सुनो कृष्ण अस कहहीं । रत्न बहुत पृथ्वी में अहहीं ॥
जो नर होय समर में शूरा । धीरज साहस सुख को पूरा ॥
ताकर स्वामी जो रण में हारै । स्वामी को संकट सो टारै ॥
लागैं घाव न मानै हारी । संकट परै न देवे फारी ॥
जियते रहै तो फेरि ले आवै । जूझै स्वामी काय सिधावै ॥

दो० एक रत्न अस शूरमा, अर्जुन जानो सोय ।
जियत जगत यश पावै, मुये मुक्ति पद लेय ५९

सुनु अर्जुन जो पूंछेउ मोहीं । औरौ रत्न कहौं मैं तोहीं ॥
भाग्यवन्त नर जगमा कोई । अन्न बित्त सम्पूरण होई ॥
प्रथम सावधान गृह रहई । अहंकार कबहूं नहिं करई ॥
अपने कुटुँब जहांलगि जानैं । माया गर्भ बीच ना आनैं ॥
भाई बन्धु आवे जो कोई । यार दोस्त बैरी किन होई ॥
बाहरते आवैं मेहमाना । ताको बिदा करै सन्माना ॥
सब कर आदर करै बनाई । बिदा करै बहु प्रीति बढ़ाई ॥

दुखित देखि चित दाया करई । भक्ति हमारि हृदयमों धरई ॥
वो ब्राह्मण देवन सम जानैं । कुल कुटुम्बकी लाज न मानै ॥
भक्तहिं देखि बिष्णु सम पूजे । अवर देव नहिं जाने दूजे ॥
परनिंदा परबाद न जानैं । परनारी मातासम मानैं ॥
नियमदान धर्महु कछु करहीं । कछु कछु बेदपुराणहुँ सुनहीं ॥

दो० यह लक्षण धनवन्त कर, सुनहू कुन्तिकुमार ।
एकरत्न जग जानिकै, निश्चय यह संसार ६०

रबि शशि भक्तरत्न मम आहीं । तुमसो जानत हौ मनमाहीं ॥
तेहिको मैं का करौं बखाना । मैं अपने मन तेहिको जाना ॥
नाम हमार जपै दिनराती । ताको तुम जानो बहुभांती ॥
अर्जुन कहै सुनौ भगवाना । तुव प्रसाद पायौं बरज्ञाना ॥
करिके कृपा कहैं यदुराई । औरबात तोहिं कहौं बुझाई ॥
हर्षवन्त प्रभु दर्श दिखाई । मोपर कृपा बहुत तुम लाई ॥
यह संशय प्रभु उपजा मोहीं । ज्ञान ध्यान में देखों तोहीं ॥
काहे से प्रभु प्रगट न होई । सबके हृदय बास कर जोई ॥
सुनु अर्जुन मैं भाषों तुमही । कामक्रोध अहंकारन करही ॥
दया धर्म सब चित्तमों धरहीं । मोहमायाकछुचित नहिंकरहीं ॥
भक्त सो जौन हृदयमों आनैं । सकहि ब्रह्म सकलघट जानैं ॥
गुरुको मंत्र परै जो काना । दया धर्महू मन में आना ॥
इतना शुद्ध रहे जो कोई । ज्ञानध्यान समपुण्य न होई ॥
सुनु अर्जुन समुझावों तोहीं । ज्ञान ध्यान से भेंटे मोहीं ॥

दो० दर्श मेरे जब पावई, सुनिये कुन्तिकुमार ।
सब दुनियां महँ जानिये, निश्चयनाम हमार ६१

अर्जुन कहै सुनो यदुराई । भक्ति तुम्हारि प्यारिसब ठाई ।।
नाम तुम्हार जपै दिन राती । तेहि नर कहँ जानहु बहुभांती ।।

दो० जहँ लगि प्रानीमात्र में, सबमें बास तुम्हार ।
तिनमहँकोहै प्रियतुमहिं, सोमोहिंकहौबिचार ६२

सुनु अर्जुन मैं भाषौं तोहीं । अहैं जौन मानव प्रिय मोहीं ।।
आनन्दित भिक्षा जो करही । सो प्राणी मो कहँ प्रिय अहही ।।
नारी सती जातमहँ जोई । तेहि पटतर मानव नहिं कोई ।।
अर्जुन बहुरि कहै कर जोरी । परब्रह्म सुनु बिनती मोरी ।।
और एक संशय प्रभु मोरे । बिनवौं नाथ दोउ कर जोरे ।।
नास पवन जो आवें जाहीं । ताकर मर्म कहौ हम पाहीं ।।

दो० पवन गवन जहँ जानऊ, सो मोहिं कहौ बुझाइ ।
कवन काम गोसाइँजू, कवनकाहिलगजाइ ६३

सुनु अर्जुन तोहिं कहौं बुझाई । कवन काम कहाँ लग जाई ।।
कवने आसन मम जप करही । द्वादश अंगुल मारुत बहही ।।
अर्जुन गाड़ होने को बारी । सोरह अंगुल बहै बयारी ।।
पंथ चले जब अर्जुन बीरा । चौबिस अंगुल बहै समीरा ।।
बात कहत सन पवन सयाना । छत्तिस अंगुल करै पयाना ।।
काम करन जब प्राणी धावै । एकतालिस अंगुल श्वासाआवै ।।

जब प्राणी के निद्रा आवै । चौवन अंगुल श्वासा धावै ।।
जब नरनारीसों रति करहीं । बावन अंगुल श्वासा बहहीं ।।
जब प्राणीके रोग सतावै । चौंसठि अंगुल श्वासा धावै ।।
बिंशतिशतजितपवन प्रकासा । तिनका जानहु कालहिग्रासा ।।

दो० पवन गमनके अर्थ सुनि, यही जन्म बृत्तान्त ।
तब शरीर के अंतके, प्रभु नर पावत अन्त ६४

तब अर्जुनयहमनहिं बिचारी । अरु अस्तुतिबिनती अनुसारी ।।
बिनती सुनहु मोरि यदुराई । ब्यासजन्मसुधि अब मोहिंआई ।।
ब्रह्माके नाती सो आहीं । तुम सों भेद छिपा कछु नाहीं ।।
यह संशय मोहिं नन्दकुमारा । केवट तनय कहे संसारा ।।

दो० आदि पुरुष तुम स्वामी, सबकर जानहु अन्त ।
ब्यासदेव केवट तनय, तौन कहौ बिरतन्त ६५

सुनु अर्जुन समुझावों तोहीं । कथा पुराण जो पूछा मोहीं ।।
संशय तोहिं देहुँ बतलाई । तुम तो मोहिं परम प्रिय भाई ।।

दो० ब्यास जन्म तोहिं भाषौं, सुनु अर्जुन चितलाइ ।
अष्टादश सुपुराण कर, मूल धामते आइ ६६

श्रीगोबिन्द प्रकाश तब कियऊ । ब्यास जन्म जवनीबिधिभयऊ ।।
सरयू नदी पश्चिम ते आई । आपन रूप धरचो तेहि ठाई ।।
ताहि समय राजा गृह गयऊ । बिधि संयोग भेट तहँ भयऊ ।।
युवती सुघर देखि मन मोहा । कैधौं इनकहँ कीन्ह बिछोहा ।।

राजा पुनि ता कहँ धरि लीन्हा । हर्षवंत ह्वै रतिरस कीन्हा ॥
राजा बहुरि अंत पुर गयऊ । केतिक दिनयहि बात न भयऊ ॥
कन्या देव नदी जब आई । जब कहुँ दीन्ह ताहि पहुँचाई ॥

दो० सो निर्बंशी राजा, कन्या हितकर लीन्ह ।
सो पुनि जाय अन्तःपुर, अनँदबधावा कीन्ह ६७

अर्जुन सुनो मोर सतभाऊ । गर्भ भवन कन्या कर नाऊ ॥
वर्ष सात की भई कुमारी । बरचिंता नृप मनहिं बिचारी ॥
दास राम राजा इक आही । कन्या ताहि पुनीत बिवाही ॥
करि बिवाह राजा ले आवा । मुदसमेत नृप बिदा करावा ॥
आश्विन मास पक्ष उजियारा । पितृकाज करही संसारा ॥
जादिन पितृकाज नृप होई । तादिन रजोवती भै सोई ॥
सुनि राजा जिय चिंता लाई । हरबानी कहँ लीन्ह बुलाई ॥
पण्डित जन सबं लावहु जाई । ब्राह्मण कहैं करै सो भाई ॥

दो० पण्डित बिप्र बुलाइकै, भाषा सब व्यवहार ।
पितृकाजतियरजवती, तेहिकर कवनबिचार ६८

ब्राह्मण कहैं पितृकर काजा । वर्ष राज महँ होवै राजा ॥
आजुहिं दिन नरपति सो होई । और लग्न धरि सकै न कोई ॥
राजा कहेउ बिलँब कछु नाहीं । करो समान सबै कछु आहीं ॥
पितृकाज जब बिप्र लगाये । राजा तुरत शिकारहिं धाये ॥
अर्जुन सुनहू बिधि संयोगा । हरिणी हरिण करै रस भोगा ॥
देखत मोहित भयउ भुवारा । रतिपति त्रासित भो तेहि बारा ॥

दो० दोना एक बनाइ नृप, बीज धरा तेहि माहिं ।
चील्ह एक बुलाइकै, सौंप दीन्ह तेहि पाहिं ६९

राजा कहै चील्ह लै जावहु । राखन रानी कहँ पहुँचावहु ॥
कहेउ बीच राखहुरे सोई । गर्भ रहै तो बालक होई ॥
इहि बिधि चील्ह तुरत लैजाई । नदी बीच जो यक भय आई ॥
एक चील्ह ऊपर तो आई । दोना आध फार ले जाई ॥
दुइबुँद बीज नदी बिच परेऊ । मछली एक ताहि गिल गयेऊ ॥
गर्भवती मछली भै आई । खेलि शिकार राजा घर जाई ॥
पितृकाज तब कीन्ह भुवारा । जो कुछ राजन का व्यवहारा ॥
यहि बातन कछु अन्त न परी । केवट जाल मछली सो धरी ॥
लै मछली राजा कहँ दीन्हा । राजा बहुत प्रेम करि लीन्हा ॥
कहेउ कि मछली उत्तम आही । जेवन हेतु बनावहु जाही ॥
लैके मीन बनावन गयऊ । तब यक बालक कन्या भयऊ ॥
हँसि के बालक भाष्यो तबही । बोल्यो नृप जो राखहु अबही ॥
नृप दासी तब अचरज कीना । मछली गर्भ उतर कस दीना ॥
राजा मछली फेरि मँगावा । अपने आगे बैठि चिरावा ॥
राजा बैठि देखही ताही । इक बालक इक कन्या आही ॥
राजा बहुत हर्ष मन कीन्हा । बालक लै रानी कहँ दीन्हा ॥
केवट कहँ नृप लीन्ह बुलाई । लै कन्या तोहिं सो पाई ॥
आपुत्री केवट सों आही । कन्या देखि हर्ष मन माही ॥
जो बालक राजा लै राखा । मच्छ नरायण नाम सो राखा ॥

राजा भयउ राजके अन्ता । अब सुनु कन्या कर बिरतन्ता ॥
कन्या रत्न जो केवट लीन्हा । नाम भगौती तेहि को दीन्हा ॥

दो० तेहि कन्या कहँ अर्जुन, केवट असमन दीन्ह ।
जीव आत्मा जानिकै, सेवाबहुबिधि कीन्ह ७०

सेवा करत बहुत दिन गयऊ । यदि बिधि वर्ष सातके भयऊ ॥
केवट घाटकेर घटवारा । जो कोइ जाय उतारै पारा ॥
बैठि नाव पर कन्या रहहीं । आपन कर्म सिखावत तहँहीं ॥
सुखसुखसों केतिकदिन गयेऊ । यकदिनकेवटब्याधित भयेऊ ॥
केवट ब्याधित घरहि सिधावा । घाट सौंपि कन्या कहँ आवा ॥
कन्या बैठी अपने भाऊ । बिधि संयोग पराशर आऊ ॥
मुनी पराशर आसन जाया । देखा केवट घाट न पाया ॥
फिरि देखा कन्या एक आही । तबऋषिवचन कहा तेहि पाही ॥
कन्यहि कहेउ देउँ कछु तोहीं । नदी पार उतार तैं मोहीं ॥
कन्या कहै अन्य ना लेऊँ । बैठहु नदी पारकरि देऊँ ॥
पिता दुखित है मोर गुसाई । दया करो ब्याधिक्षय जाई ॥
बोले ऋषी भयउ अब काजू । पिता तुम्हार नीक भा आजू ॥
तुम अपने मन सोच न मानहु । बचन हमार सत्य करि जानहु ॥
पिता तुम्हारा नीक ह्वै जाई । आवहि अवशि रोग क्षय पाई ॥

दो० इतना भाषि ऋषीश्वर, बैठि नाव पर जाय ।
कन्या बैठि डाँड़ लई, दीन्हेसिनाव चलाय ७१

थोड़ी दूर नाव जब आई । उत्तम बात ऋषी चित आई ॥
उत्तम घड़ी अहै यहि बारा । और नारी नहिं साथ हमारा ॥
यहि बेरा मोसों रति मानै । होवे सुत त्रिलोक जेहि जानै ॥
चारिबेद सुख पाठ बखानै । अष्टादश पुराण सो जानै ॥
तबहिं पराशर कह्यो बिचारी । सुनहु बचन केवट की बारी ॥
जगत मध्य तुम्हार यशरहहीं । मानहु बचनजो कछुहमकहहीं ॥

दो० हृदय बिचार पराशर, कहेउ बचन परमान ।
सुन्दरि सुनहुसुलोचनि, देहुमोहिं रतिदान ७२

तब कन्या मन बहुत लजानी । ऋषि सन बोली अमृत बानी ॥
देह गन्ध मम मत्स्य समाना । मैं बाला कछु भेद न जाना ॥

दो० काह देखि मोहिं रीझेउ, कीन्हा चहहु प्रसंग ।
तुम्हें योगहमनाहिं हैं, केहिबिधिलावहुअंग ७३

तब ऋषि बोले बचन रसाला । यह नहिं सोच करो तुम बाला ॥
हम आज्ञा दीन्हा भगवती । होहु तुरत तुम यौबनवती ॥
देह तुम्हारि सुगन्ध बसाई । बास सुचार कोसलौं जाई ॥
योजन गन्ध नाम तेहि दीन्हा । होहु तुरत हम आज्ञा कीन्हा ॥
ऋषिहि बचनकोमेटनहारा । भयेउ तुरंत न लागेउ बारा ॥
कहेउ कि रति दे केवट बारी । औरो मैं कछु कहौं बिचारी ॥

दो० कन्या बोली हर्षिके, मैं आज्ञा शिर लेउँ ।
दोनों दिशा मनुष्य हैं, कैसे के रति देउँ ७४

तब ऋषि अपने मनै बिचारा। कुहिरा जन्म भयउ तेहि बारा॥
अस कुहिरा भो कहा न जाई। दिन कै तुरत राति ह्वै जाई॥
ऋषि अति हर्षवन्त मन कीन्हा। रतिरस दान नावपर लीन्हा॥
कीन्हे रति कछु देर न भयऊ। ब्यासजन्म तेहि ठौरहि भयऊ॥
जन्म जो भयउ अरु बड़ि काया। कही न जाय बिष्णु की माया॥
अर्जुन सुनहु कहैं भगवाना। चारि बेद मुखपाठ बखाना॥

दो० ब्यास जन्म तोहिं भाषेऊँ, सुनु अर्जुन चितलाय।
जन्म जन्म कर पातक, पढ़त सुनत क्षय जाय ७५

सुनु अर्जुन तिनको ब्यवहारा। ऋषी उतरि गये पहिले पारा॥
ब्यासदेव तब बैठे जाई। परमज्योति महँ ध्यान लगाई॥
ऋषिसुन्दरि से सब रस लीन्हा। कन्या रूप फेरि तेहि दीन्हा॥
मुनि स्नान को कीन्ह पयाना। तिनको बिदा कीन्ह सन्माना॥
सो कन्या अपने घर आई। पाराशर मुनि बैठे जाई॥

दो० दास राम नृप कन्या, मीन गर्भ अवतार।
यहिबिधिजन्मब्यासमुनि, सुनहुसोकुन्तिकुमार ७६

तब अर्जुन उठि सेवा लाई। ब्यास जन्म जानेउँ यदुराई॥
सकलपुराणन ब्यास बखाना। याको अर्थ कहहु भगवाना॥
आदि पुराणकवन प्रभुभाखा। अष्टादश बेवरा करि राखा॥

दो० आदि पुराणप्रभु भाषहु, मेटहु मोरा शोक।
अष्टादश पुराणमहँ, केतिक हैं अश्लोक ७७

सुनु अर्जुन जो पूछेहु मोहीं। भिन्न भिन्न करि भाषौं तोहीं॥
प्रथम ब्रह्मपुराण ओ आही। दश सहस्र है पद्य सुताही॥
पद्यपुराण अनूप जो कीन्हा। पचपन सहस पद्य शुभ लीन्हा॥
तेहि पाछे भो बिष्णु पुराना। तामें तेइस सहस बखाना॥
शिव पुराण तबहीं निर्माई। चौबिस सहस पद्य सुखदाई॥
कीन्हेउ मुनि भागवतपुराना। सहस अठारह पद्य बखाना॥
मुनि नारद पुराण जो भाखा। सहस पचीस पद्य तेहिं राखा॥
मार्कण्डेय पुराण जो आहीं। नव सहस्र अश्लोक हैं ताहीं॥
ता पाछे भो अग्निपुराना। पन्द्रह सहस्र सुपद्य बखाना॥
तेहिं पीछे भविष्य उपराजा। चौदह सहस पंचसत राजा॥
फेरि ब्रह्मवैवर्त पुराणा। सहस अठारह पद्य प्रमाना॥
पुनि निर्माया लिंगपुराणा। एकादश सहस्र परमाणा॥
ता पीछे बाराह बखाना। चौबिस सहस्र पद्य पुराणा॥
फेरि स्कन्द पुरान बनावा। सहस इकासी पद्य सुहावा॥
अरु बामन पुराण जो आहीं। दशसहस्र अश्लोक हैं ताहीं॥
पुनि उपजाया कूर्मपुराणा। सत्रह सहस पद्यपरमाणा॥
मत्स्यपुराण सुरम्य बनाई। चौदह सहस्र पद्य सुखदाई॥
गरुड़पुराण कीन्ह ऋषिसत्तम। उनइस सहस पद्य हैं उत्तम॥
पुनि ब्रह्माण्डपुराण बनावा। बारह सहस सुपद्य सुहावा॥

दो० एक एक करि भाषेउँ, पुनि कीन्हा सबथोक।
अष्टादश पुराणमहँ, चारिलक्ष अश्लोक ७८

ब्यास पुराण अठारह कीन्हा। सो अर्जुन तुमसों कहि दीन्हा ॥
चारि लक्ष श्लोक तिन माहीं। इनमें घाटि बाढ़ कछु नाहीं ॥
जो कोई घाटि करै उन माहीं। लिखनहार शिर दोष पराहीं ॥
सुनु अर्जुन तोपर मम दाया। हम तुम एक दूसरी काया ॥
तेहि कारण कछु भेद न राखा। उत्पति पालन लै मैं भाखा ॥
जीव रूप सबके घट रहऊँ। सुनु अर्जुन तोसों सच कहऊँ ॥
बड़े जीवमों बड़ो प्रकाशा। छोट जीव मों छोट प्रकाशा ॥
गाढ़ेपर जो सुमिरे मोहीं। तेहि क्षण तहँहि परगट होहीं ॥
संकट कोटि उबारौं ताहीं। अर्जुन सत्य कहों तोहि पाहीं ॥

दो० गुप्तकथा सब जानेउ, सुनहु स्वामि मतिधीर।
संकटसे केहि राखहु, सो भाषो यदुबीर ७९

सुनु अर्जुन जेहि संकट परहीं। निश्चय मोर नाम चित धरहीं ॥
ताकर संकट काटौं जाई। दुष्ट मारि तेहि देउँ छुड़ाई ॥
जेहि जेहि कर मैं संकट टारा। सो तोहि भाष कुन्तिकुमारा ॥
एक समय बिधि अवसर राजा। पानी पियन गयो गजराजा ॥
तृषावंत जल भीतर जाई। ताहि ग्राह यक पकरचो धाई ॥
काल समान धरा अस ताहीं। गजकर जोर चला कछु नाहीं ॥
खैंचि ग्राह लै चला निदाना। गज का कालआयनगिचाना ॥
अतिहि कष्ट गज भयो दुखारी। महाबिकल ह्वै कहसि पुकारी ॥
कृपासिन्धु मोहि लेहु उबारा। परेउँ अथाह अगम जल भारी ॥
हम सत्यभामा खेलैं पासा। पुरी द्वारका मध्य निवासा ॥

यहि अन्तर गजराज पुकारी। सत्यभामा कह पासा डारी ॥
सत्रह सहस योजन गजराजा। ताकी कानन सुन्यो अवाजा ॥
पासा डारि चल्यो अकुलाई। सत्यभामातबकहा रिसाई ॥
केहि राखेउ को है यहि ठाई। खेलत माया करौ गोसाई ॥
पांसा मोर परा तुम देखा। मैं अपने खेलब करि लेखा ॥

दो० तबहि कृष्ण हँसि बोले, तुम जनि मानहु मन्द।
ग्राह गहा गजराजकह, ताकर काटौं फन्द ८०

तब सत्यभामा अचरज माना। यह समुझाय कहौ भगवाना ॥
मैं जानतहौं तुमहिं गोपाला। दया धर्म तुमहीं नँदलाला ॥
सत्रह योजन है गजराजा। ताकर कैसे सुनेउ अवाजा ॥
जो तुम सत्य कहहु यह बानी। मोहि देखावहु शारँगपानी ॥
तबहिं गरुड़ हंकारेउ बीरा। तेहि चढ़ि गयो ताहिके तीरा ॥
ग्राह परा देखा जल माहीं। चक्रघाव सो मारा ताहीं ॥
हस्ती ठाढ़ रह्यो जलतीरा। थर थर कांपत सकल शरीरा ॥
जब सत्यभामा देखा जाई। तब बहु बिधिकै अस्तुतिलाई ॥
द्रुपदसुता की लज्जा राखी। सो अर्जुन तुम देखा आँखी ॥
संकट ते प्रह्लाद उबारा। सो तुम जाना कुन्तिकुमारा ॥
हिरण्याक्ष को उदर बिदारा। अन्त्रनमाल गले महँ डारा ॥
मार्कण्डेय सुनो हम पाहीं। ब्रह्माके नन्दन सो आहीं ॥
तीनलोक जब परलय भयऊ। बूड़न लगे यादिमोहिंकियऊ ॥
कहेउ बचावहु शारँगपानी। गर्भान्तर राखेउ तेहि आनी ॥

धन्यगरुड़बिनता सुत भाखा। अस्सी युग पींठी पर राखा॥
तेहिऊपर तनु सकेउ न सँभारी। अक्षय बटतर दीन्ह उतारी॥

दो० ब्याकुल भयो बिनतासुत, जानेउ मनमें बीर।
तेहि पुनि कीन्हेउ गर्बबहु, बैठिरहोमतिधीर८१

अर्जुन कहैं सुनो यदुराई। मोरे चित शंका कछु आई॥
तुम्हरे कैसे उदर समाना। संशय बड़ उपजा भगवाना॥
सुनु अर्जुन तोहिं कहौं बुझाई। सबमों मैं मोहिं सबै समाई॥
सत्य उदधि पृथ्वी नवखण्डा। मेरु सुमेरु सकल ब्रह्मण्डा॥
कहँ लगि सृष्टि कहौं तोहि पाहीं। तीन लोक मम उदरके माहीं॥
बिनतासुत जो बाहन भाई। शतयोजन ताकीचकलाई॥
पक्षी एक गरुड़ते भाखा। पूछेउ स्वामी तुम कस राखा॥
तीन लोक में जो कछु आहीं। सो देखहु मोरे घट माहीं॥
भक्ति भाव जानेउँ मैं तोरा। तुम मौसीसुत भाई मोरा॥
तुम सब भेद कहा समुझाई। औरके बूते जानि न जाई॥
अर्जुन कहैं सत्य यदुराई। मैं तुम्हार मौसीसुत भाई॥
जानेउ भेद आज्ञा नहिं मेटी। कुन्ती उग्रसेन की बेटी॥

दो० अर्जुन कहा गोसांइँ जू, सो तुम कहो उपाय।
तुम्हरे चरणकमल तजि, चित्तअन्तना जाय८२

अर्जुन बचन सत्य सुनु मोहीं। मैं अपनेहित जाना तोहीं॥
बहुत भाँति का कहौं बुझाई। नामजोमोर भजहिं चितलाई॥

भजचित लाइ नाम मम जोई। तेहि समान अर्जुन ना कोई॥
संकट कोटि जो सहै शरीरा। नाम मोर छाड़ै नहिं बीरा॥
धन औ द्रव्य न मनमें जानै। दुख सुख की शंका नहिं आनै॥
थके जन्म दुख पावै सोई। कोटिजन्मताकहँ सुख होई॥
चितदे नाम जपै जो बीरा। ताके पाप न रहै शरीरा॥
नाम ब्रह्म चित मैं धरि जाना। सो प्राणी है देव समाना॥
अर्जुन सत्य सुनो हम पाहीं। मोर भजन बिनअरुकछु नाहीं॥
कोटिन तीरथ ब्रत जो जाना। नहिं अर्जुन है नाम समाना॥
गया प्रयाग पिंड बरदाना। नहिं अर्जुन है नाम समाना॥
काशी क्षेत्र करै अस्नाना। नहिं अर्जुन है नाम समाना॥
गंगासागर करै अस्नाना। नहिं अर्जुन है नाम समाना॥
कोटिन करै देव अस्थाना। नहिं अर्जुन है नामसमाना॥

दो० उदय अस्त सब जाके, चार बेद मुख जान।
कोटिकोटि गुण जानै, नाहिंन नामसमान ८३

सुनहु अर्जुन पाण्डुकुमारा। नाम कि महिमालिखैंबिचारा॥
कल्पबृक्षकी कलम बनाई। घास पात सब दीन जलाई॥
राख समेटि समुद्रमें डारी। मथन कीन्ह बहुबिधिबिस्तारी॥
सात समुद्र कीन्ह मसिहानी। धरती कागद कीन्ह सुहानी॥
लिखतलिखतसबभूमिसिराई। नामकिमहिमालिखी न पाई॥

दो० तनाव कीन्हा सरस्वति, सुनु अर्जुन चितलाय।
महिमा मोरि न जानै, कोटिन करै उपाय ८४

अब सुनुअर्जुन कहौं बुझाई। महिमा मोरि भक्त कछु पाई ॥
सो भवसागर जानै कैसा। कुसुमरंग अमरावति जैसा ॥
जोकछुतीन लोक मों आही। एकहु दृष्टि न आव ताही ॥
सप्तपतालअपर ब्रह्मण्डा। सप्तद्वीप पृथ्वी नव खण्डा ॥
तीन लोक अर्जुन यह आहीं। सो दर्पण अस देखे ताहीं ॥
चन्द्रसूर्य दीपक अस जानै। कामदेव मर्कट सम मानै ॥
धनदसमान धनी को आहा। दुखिया सम जानै ते वाही ॥
उञ्चासकोटिमारुतहै कैसा। नासा पवन बहत है जैसा ॥
अर्जुनसुनो कल्पतरु जोई। जानै एक बृक्ष है सोई ॥
सातसमुद्र नीर अतिभारा। सो जानत है चुल्लू धारा ॥
इन्द्र समान रावनहिं कोई। रंक समान बुझावै सोई ॥
गिरिसुमेरु कोमन मों कहहीं। ला एक परा जनु जहहीं ॥
हिमगिरिकहँमानहिंवे कैसा। अतिहीलघु यक तृण है जैसा ॥
अवरो रत्न जानहीं कैसा। मसक एक बैठा है जैसा ॥
बरुणहिते जानतहै कैसे। जलमें एक कीटहै जैसे ॥
बृहस्पतिको मूरख कै मानै। पुष्पसदृश तारागण जानै ॥
इतना दृष्टि न आवै ताहीं। नर बपुरा केहि गिनती माहीं ॥
अर्जुन सुनो कृष्णअसकहई। नाम भजनसे यह फल लहई ॥
महिमा मोरिजान जो कोई। ताकी दृष्टि सुनो अ सिहोई ॥

दो० महिमा मोरि जो जानै, मोहिं समान है सोय।
सब मिथ्या करि जानेऊँ, दृष्टि न आवै कोय८५

तबउठि अर्जुनअस्तुतिलाई। बचन हमार सुनहु यदुराई ॥
ऐसा कछु मोचित्त न आहीं। नामकिमहिमाकेहिबिधिपाहीं ॥
सो जगजीवनकहौ बुझाई। जेहि ते चित्त अनत ना जाई ॥
जेहिबिधि होइ मोर उद्धारा। सो मोहिं भाषहु नन्दकुमारा ॥

दो० भजन तुम्हार न जाना, केहि बिधि सेवों तोहिं।
यहि भवसागर स्वामी, पार उतारहु मोहिं ८६

अर्जुनसत्य सुनो हम पाहीं। तुम सम भक्त जगतमों नाहीं ॥
तात मोर कछु अंत न पाया। अन्तकाल चित राखो दाया ॥
नाममोर हृदय महँ जानहु। और बात कछु चित्त न आनहु ॥
नामकि महिमा पूछेहु मोहीं। सो अर्जुन भाषौं मैं तोहीं ॥
मोर भजन जाने जो कोई। केवल नाम हृदय महँ होई ॥
यहिमहँ जातिपांतिकछुनाहीं। मोर भक्त सबते बड़ आहीं ॥

दो० अर्जुन कहा गोसाइँजू, पायउँ सबको अन्त।
बृथा जन्म है ताहिकर, बिना भक्ति भगवन्त८७

नामकिमहिमाजान्यों स्वामी। तीनलोक के अंतर्यामी ॥
इतना दिनतो मिथ्या भयऊ। कष्ट सकल अर्जुन के गयऊ ॥
आजुहि निर्मल भयो शरीरा। आदि अन्त जानेउ यदुबीरा ॥
कोटिजन्म कर पातक नाशा। प्रभुके चरणकमलकी आशा ॥
तीन लोक सिरजेउ भगवाना। तुमहिंछांड़िनहिंजानेउ आना ॥
जो स्वामी तुम गर्ब प्रहारी। कोअस्तुतिकरिसकहिंतुम्हारी ॥

चारि बेद मुख पाठ बखानै। आदि अन्तसुजहांलगि जानै ॥
रोम रोम मुख जिह्वा होई। अस्तुतिकरिसक तदपिनकोई ॥
बातकहत हम कीन्ह ढिठाई। सो मोसे भाषौ यदुराई ॥
श्रीगोबिन्द राखिमोहिं लीजै। केवल भक्ति अखण्डित दीजै ॥
तुम्हरे चरणकमल की आशा। यह संशय मोहिंकहौ प्रकाशा ॥

दो० अर्जुन कहा गोसाइँजू, यह कीजै परकाश।
जन्म जन्मममचितरहै, हरिचरणनकीआशवद

अर्जुन सत्य बचन सुनु मोहीं। गीता ज्ञान कहौं मैं तोहीं ॥
आवागमन तासु नशि जाई। कोटि जन्म कर पाप नशाई ॥
सबै शास्त्र मथिकै जब लीन्हा। रामरत्न गीता तब कीन्हा ॥
श्रीमुख मैं भाष्यों तोहिं जोई। तेहि समान जगमें नहिं कोई ॥
ताकेगुण सुनि कुन्तिकुमारा। जब यह ग्रन्थ चलै संसारा ॥
मानव बैठि रहै जो कोई। ताहि मोक्ष की प्रापति होई ॥
श्रीमुख सुरपुराण यह गीता। क्षत्रिय पढ़ै सो रण में जीता ॥
संत असंत पढ़ै जो कोई। ज्ञानवन्त उत्तम गति होई ॥
चित देकै जो पढ़ै सुनावै। यमदूतहु नहिं ताहि डेरावै ॥
निश्चयनाम जो पढ़ते अहई। जहाँ जाय चिन्ता ना करई ॥
गीता पढ़ैं सुनै जो कोई। बृद्ध होय तो छूटै सोई ॥
आधि ब्याधि हैं जाके अंगा। गीता पढ़त तजत सो संगा ॥
दुष्ट चोर ठग तहाँ न रहई। राजा प्रजा की रक्षा करई ॥
जेतिक गुण गीता मां आही। आदि अन्त कहिसकौनताही ॥

तीन दिवस जो पढ़ै सुनावै। कोटि कोटि गुण कहतनआवै ॥
देवन केरि पाठ यह गीता। मानव पढ़ै सुनै यकचीता ॥
दुखदरिद्र सब जात पराई। गीता पढ़ै सुनै मन भाई ॥
रामरत्न गीता प्रभु भाखा। परम तत्त्व अर्जुनकरि राखा ॥
श्रीमुख गीता पूरण भयऊ। अर्जुन कर संशयमिटिगयऊ ॥
अर्जुनकृष्णग्रंथ यह कीन्हा। रामरत्न भाषा करि दीन्हा ॥

दो० श्रीगोबिंदऔपार्थमिलि, परमगूढ़ यह कीन्ह।
तिनकेचरणकमलचित, कुशलासिंहचितदीन्ह८९

श्रीमुख गीता अमृत बानी। गुरुप्रसाद भाषा रस आनी ॥
बुद्धिज्ञान गुरु हमको दीन्हा। उत्तम ग्रन्थ देखिकै लीन्हा ॥
नाम भेद गुरु येहिते पावा। दयाजोकीन्हज्ञानमोहिं आवा ॥
दुसरे कीन्ह साधु की सेवा। तिनकी दया पायऊँ मेवा ॥
देखेउँबूझिजो हृदयकेमाही। रामनामते आन न आही ॥
काया माया मिथ्या जाना। पुनि पाये शंकर करि ध्याना ॥
देखउँ जग कोऊ थिर नाहीं। मिथ्या करि जानेउँ चितमाहीं ॥
धन दारा सुत बंधु जो आहीं। धंधा करि जानेउँ मनमाहीं ॥
अन्न जात कीन्हा उपकारा। त्राहि त्राहि कै कीन्ह पुकारा ॥
तबहीं ते मन भयउ उदासा। साधु चरण पूजन महँ आसा ॥
प्रकटहोय मुखकबहुँ न भासा। हर्षित हृदय भयउ बिश्वासा ॥
यही भाँति जो कर चितलाई। तब कछु ज्ञान हृदय में आई ॥
यहि बिधि दयागुरूजबकियऊ। मोहछूटि निर्मलमन भयऊ ॥

दो० गुरुदयाल भो मोहिंपर, छूटि गयौ सब भर्म।
रामनाम चित जानेउँ, अपर न कीन्हेउँ कर्म ९०
सबखोजे ना मिलिसकै, ना कोउ पाये बास।
पाये अर्जुन भक्त जे, छुटी और की आस ९१

इति अर्जुनगीता समाप्ता।

———

श्रीमती कमला भार्गव द्वारा तेजकुमार प्रेस (प्रा०) लि० लखनऊ में मुद्रित।

धार्मिक तथा वेदान्त

ब्रजविलास	७५ – ००
सुखसागर	१६० – ००
भक्तमाल भाषा अर्थात् भक्तकल्पद्रुम लेखक—श्री प्रतापसिंह	६० – ००
शिवपुराण-भाषा ग्यारह खण्डों में	१६० – ००
महाभारत भाषा सजिल्द	१५० – ००
भक्तिसागर चरणदास	१०० – ००
योगवाशिष्ठ संपूर्ण २ भागों में	४३० – ००
विश्राम सागर सटीक सचित्र सजिल्द	१८५ – ००
रामायण तु० कृ० टीका पं० लक्ष्मण प्रसाद भारद्वाज सचित्र सजिल्द	१४६ – ००
भक्तमाल नाभाजी सटीक बड़ी सजिल्द	१६० – ००
अष्टावक्र गीता सटीक	५५ – ००
चाणक्य नीति दर्पण	१५ – ००
चित्रकूट माहात्म्य	७ – ००
प्रेम सागर सजिल्द	८० – ००
अनुराग सागर	१८ – ००